37.

"नाच्यौ बहुत गोपाल" उपन्यास में दलित विमर्श

डॉ. सुधीर ग. वाघ
हिंदी विभागाध्यक्ष
शिवाजी महाविद्यालय,हिंगोली. महाराष्ट्र

हिन्दी साहित्य के अंतर्गत दलित साहित्य सज्ञा विशेष स्थान पाकर उसका एक ही अंग बन गई है। आधुनिक हिदी साहित्य मे अमृतलाल नागर की गणना एक अत्यंत महत्वपुर्ण रचानाकार के रुप में होती है । अमृतलाल नागर नें कहानी, उपन्यास, बाल साहित्य, संस्मरण,रिपोतजि निबंध और जीवनी में अपनी कलम जमकर चलाई है । अमृतलाल नागर के उपन्यास चर्चित है। नाच्यौ बहुत गोपाल अमृतलाल नागर का महत्वपूर्ण उपन्यास है। नाच्यौ बहुत गोपाल में सदियो से अत्याचारित दलितवर्ग की पीडा को साकार किया है । समाज के अन्याय से त्रस्त दलित जाति की मुक्ति की आवाज नागर ने अपने उपन्यासों में उठाई है ।

अमृतलाल नागर ने उच्चवर्ग के किरदारों को दफना कर अपने पात्र निम्न वर्ग से चुने । अमृतलाल नागर एक ऐसा नाम है, जो दलित न होते हुए भी दलितों की व्यथा को समझ सके है । न-ागर जी ने नाच्यौ बहुत गोपाल नामक बृहद उपयास सन 1971 में लिखा हैं । प्रस्तुत उपन्यास युगधर्मी साहित्यकार अमृतलाल नागर का सर्वाधिक मौलिक और नवीनतम उपन्यास है । इसमें मेहतर कहे जान-ेवाले दलित जाति के जीवन को आधार बनाकर उनके जातिगत समाजशास्त्र को अत्यंत हदयग्राही और सृजनात्मक शैली शिल्प में प्रस्तुत किया गया है । उपन्यासकार मेहतरों के रुप में नारकीय जीवन भोग रहे लोंगो से साक्षात्कार करके उनके जीवन की गहराईयों तक जानने का प्रयास करते है । मेहतर जाति किन सामाजिक परिस्थिती में अस्तित्व में आई, उसकी धार्मिक सांस्कृतिक मान्यताएँ क्या हैं मेहतर जीवन का आर्थीक एवं यौन शोषण का वर्णन लेखक करता है । साथ ही काम पीडिता निर्गुनिया के आंतरिक का बाह्य संघर्ष संस्कार तथा विकार में द्वद्व और व्यवस्था से टकराहट की गुंज भी सुनाई देती है ।

आलोच्य उपन्यास ढाई वर्षो के अथक परिश्रम और मेहतर मुहल्ले के निवासियो के साक्षात्कार करके लिखा गया है । नागर जी को इस उपन्यास को लिखने की प्रेरणा एक सनसनीखेज घटना को पढकर मिली । मैने सुना कि एक धनी वृध्द ब्राह्ण व्यापारी की तरुणी भार्या एक मेहतर के साथ भागी थी । अपने साथ वह काफी गहने और रुपये भी ले गई थी और दो दिनों के बाद ही पकडी गई । यही से उपन्यास का ताना बाना बुनना शुरु हुआ । भारतीय समाज में दलित सदियों से हाशिये पर रहे है । उ-नका जीवन दयनिय रहा है । उपन्यास के प्रारंभ मे नागर जी मेहतर समाज की स्थिति का बोध कराते हुए लिखते हैं कि प्रकृति ने मानो इस बस्ती के कपाल पर ही दमन शब्द लिख दिया है । दरअसल मेहतर समाज व्यवस्था की विकृतियों के कारण शोषित व शासित है । आजादी के बाद भी वह विविश जीवन जी रहा है, इस कडवा सत्य को स्वीकारना पडेगा ।

अमृतलाल ने मेहतर जाति के इतिहास पर प्रकाश डालते हुए यह दर्शाया है कि ये लोग पहले राजपुत जाति के थे किंतु मुसलिम आक्रमण के दौरान इहें जबरदस्ती मेहतर बनाया गया । उच्च जाति के क्षत्रिय महत्तर क्षत्रिय महत्तर से मेहत्तर शब्द उत्पन्न हुआ । इस बात की पुष्टि लेखक जब दलित मुहल्ले में जाते हैं तब तक एक मेहतर करता है । बावूजी हमारे एक बुजुर्ग ने बतलाया था कि हम लोग भी कोई सदा के मेहतर नहीं थे छत्री थे । गोरी गजनी के बाश्शा से लडाई मे हार गये । वह हमें पकडलें गया । हमारी औरतें हमसे छीन ली । उनका धरम बदल दिया । हमसे भी कहा कि अपना दीन धरम छोडकर हमारे मजहब में आ जाओ । हमने कहा कि हम अपना धरम हरगिज हरगिज नहीं छोडेगे । बाश्शा ने गुस्से में कहा कि नई छोडेंगे तो तुम्हें हमारा मल मुत्र उठाना पडेगा । हमने ये काम करना मंजुर किया पर अपना धरम नही छोडा ।[1]

निर्गुणिया नागरजी के बहुचर्चित उपन्यास नाच्यौ बहुत गोपाल की नायिका है। निर्गुनिया एक ब्राह्मण घर की संस्कारशील कन्या है। उसके जीवन की कई छोटी बडी घटनाओ को उजागर किया गया हैं। निर्गुनिया के पिता एक ब्राह्मण महाराजा पंडित बटूकप्रसाद के मुंशी थे। बाल्यावस्था में माँ की मृत्यु हो गई इसलिए मातृप्रेम से वंचित रहना पडा। उसका बाचपन नाना नानी के यहाँ बीता। नाना नानी के मृत्यु के बाद उसके पिता ने उसे अपने मालिक पंडित बटूक प्रसाद के यहाँ सौप दिया। राय साहब की कोठी जो वासना से लवालव जीवन भोगना पडा। वह परिस्थितियों की शिकार हुई। उसकी सीतेली माँ पैसे के लिए अल्प आयुमें उसे वासना के दलदल में ढकेल देती है। किशोरावस्था में वासाात्मक जीवन के प्रति झुकाव प्राकृतिक एवं अप्राकृतिक यौासंबंध से उद्दीप्त वासना एवं चार चारपुरुषों के साथ एक दिन में संभोग उसके जीवन को नरकीय बाना देता है। पैसे के लिए ही उसकी सौतेली मॉ उसकी शादी मसुरिवादीन के साथ करवादेती है। पति उम्र में बूढा एवं संदेही है। वह निर्गुनिया के यौवन को भोगने के लिए शादी तो कर लेता है किंतु निर्गुण की काम वासना को तृप्त करने की शक्ति उसमें नहीं हैं। यौन क्षुधा की मारी निर्गुण अनवरत काम ज्वर में तडपती है, जब उसका पति उसे ताले में बंद कर देता है। ऐसे में बुढे में बूढे पति का व्यवहार ठीक होता तो शायद निर्गुण अपने जीवन सेएवं नियति से समझौता कर लेती। किंतु उसका व्यवहार तो अमानवीय होता है। फल स्वरुप निर्गुण में वासना की ज्वाला और भडक उठती है। कामवाली मेहतरानी कुछ दिनों के लिए छुट्टी पर रहती है। तब उसका बेटा मोहन सफाईके लिए आनेलगता है। निर्गुणा उसे अपने मोहपाशमें फँसाकर उसकेसाथ शारीरिक संबंध स्थापित करती है। असलमें मोहन के प्रेम मे पागल निर्गुण उसके साथ भाग जाती है और निर्गुणा से निर्गुण हो जाती है। वह परिस्थिती की शिकार है। अपनी हवस पुर्ति के लिए वह मेहतरानी तो बन जाती है, पर एकदम मेहतरानी नही बन पाती। इस प्रकार नागर जी ने निर्गुनिया के जरिए इस समाज की सडी गली दलित स्थिति को सच्चाई के साथ प्रस्तुत किया है।

मोहना या मोहन डाकू नाच्यौ बहुत गोपाल का महत्वपुर्ण चरित्र है। दरअसल मोहान को भी अपने मेहतर होने का वैसा गर्व है जैसा कि किसी ब्राह्मण को अपने ब्राह्मण होने का होता है। मोहान चुँकि मेहतर होने का कार्य नही करता लेकिन निर्गुणिया को पुर्णा मेहतरानी बनाने की ठान लेता है तथा उसे मेहतरानी बनाकर खुद डाकू बन जाता है। जब निर्गुणिया को दोहरा संघर्ष करना पडता है। एक मेहरानी के तौर पर और दुसरा डाकू की पत्नी के रुप में। मोहान के आंतक के कारण उहें कोई परेशान नही करता। सुविधाएँ भी आसानी से प्राप्त हो जाती। हक्स की भूख पर वह काबू पा लेती है। मोहान के साथ भाग जाने के पश्चात निर्गुणिया के हालत सचमुच दयनीय हो जाती है इसका उपन्यासकार ने यथार्थ चित्रण किया है। मोहान की माँ की नफरत देखिए इसे कही अलग ले जाकर रखो। मेरे घर में रेडियो के लिए जगह नही है। आज ब्राह्मण छोड मेहतर पकडा है कल तुम्हें छोडकर किसी और की चाट में भाग जायेगी। इसका बूढा पुलिस मे स्पष्ट कर दे तो सबसे पहले हमारे ऊपर ही सक सुभा जायेगा। एक छिनाल के पीछे हम शरीफ आदमियों की इज्जत क्यों जाय तो तुम तो अपने मामू के यहाँ रहते हो यहाँ तुम्हारे और तीन भाई बहन रहते है मैं उनके और अपने झमेटें पुलिस से भुगवाने के लिए तैयार नही हु।[2] मॉ के मना करने पर मोहना निर्गुणिया को लेकर मामा के घर जाता है।

मामा के घर में मामी पहले तो बहुत खरी खोटी सुनाती है। निर्गुणिया को रहने देने से साफ मना कर देती है, पर मोहान क्रिश्चन बन जाने की बात करता है तब नरम पड जाती है। किंतु गालियाँ तो सुनाती रहती है जैसे मेरे लडके को फँसाने से पहले तुने कितने खसम और किये बोल। तुझे मेरी ही इज्जत पर डाका डालने को सुझा था रंडी छिनाल कहीं की। तेरी जवानी में आग लग जाए। कलमुही के भी आई तो चार पाँच सौ पल्लियाँ हरामजादी। जा चिलम भर के ला। तेरे मे कीडे पडे। तेरे रोए रोए को बिच्छु काटे। तेरी सात पिढियाँ नरक में पडे। तेरी माँ दादी।[3] माई के शारीरिक एवं माासिक अत्याचार से निर्गुणिया ऊब जाती है। एक बार मोहना से उसको समझा देने की बात कहती है। तब मोहना बिगडता है कि मै तुम्हे कागज पेन्सिल देता हूँ। तुम्हे यह लिखकर देना होगा कि मैं अपनी मर्जी से फाँसी लगा रही हूँ इसमे और किसी का कसूर नहीं है।[4] जब लिखने में देर करती है तो मोहना और बिगडता हुआ कहता है कि नही फाँसी तो तुम्हें आज ही लगानी पडेगी। तुम क्या लगाओगी मैं अपने हाथ से तुम्हारे गले में फाँसी का फंदा डालूंगा लेकिन चूंकि खुद फाँसी पर चढना नही चाहता इसलिए तुमसे वह बयान जरुर लिखवाऊंगा। लिख साली।[5] सचमुच निर्गुणिया की दुर्दशा देखो जैसी थी।

उसके बाद मोहना खटिया पर चढकर साडी का फंदा बांधकर लचकाते हुए कहता है अखिरी बार तेरा सुख भोगूंगा और अपने ही हाथो से तुझे फाँसी पर चढा दूंगा । माई निर्गुण को जबरदस्ती भंगिा बानो की कोशिश करती है । एक दिन माई घर में ही ट्टटी जाती है और उसे ऊठाकर नाले में फेक देने को कहा जाता है तब निर्गुणियाकहती यह मुझेसे नही होगा । मोहना के लिए ब्राह्मणी से मेहतरानी बन जाती है । मार मार के भंगी बनाया जाता है । मैं सचमुच में मार मार भंगिन बनाई गई थी ।[6] आलोच्च उपन्यास मे मेहतर जाति की स्त्रियों के साथ यौन शोषण कैसे किया जाता है । इसका वास्तविक व मार्मिक चित्रण किया गया है ।

निर्गुणिया शरीर सुख पाने की लालसा मे तबाह हो गई । माई दूसरे दिन निर्गुण को ट्टटी उठाने कहती है । तब उसका सर चकरा गया यह मना करती है तो माईउसका खनेटा खीचते हुए कहते लगी बहरी है क्यामेरे बेटे की जिदगानी खराबकर सकती है, हरामजादी और यह नहीं कर सकती अरे तु क्या तेरा बाप भी उठायेगा चल उठा ।[7] माई निर्गुणीया को बुरी तरह से पीटती है । मारखाते खाते वह बेहोश हो जाती है । मामू भी कहता है कि माईका कहना ठीक है ।तुम्हारे हमारे पुश्तैनी काम की आदत तो डालती ही होगी इसके बिना बिरादी मे मुँह कैसे दिखाओगी । जिस घर में आई हो उसके कायदे कानुन से नही चलोगी तो बदनाम होगी कि जरुर किसी और जाति की औरत है, भगा के लाया है ।[8] लेखक ने न्ि-ार्गुणिया के संपुर्ण दिखाया है । जब तक वह ब्राह्मण समाज मे रही उसका लगातार शोषन होता रहा पर मोहना के साथ भागकर वह मेहतरानी बन गई तब अपनी वासनाओ के साथ उसने विजय प्राप्त कर, मानो योगिनी बन गई । राम एवं श्याम को भजना छोडकर वह मोहना को भजती है । वस्तुत:यह परिर्वतन फकीर बाबा के कारण आया है । उपन्यास के अंत में निर्गुणिया एक भरा पुरा संपन्न परिवार छोडकर जाती है । उाकी संताने निर्गुण एवं बेटी शकुंतला उच्च शिक्षा हांसिल करके नौकरी में लग जाते है ।गौरतलब बात यह है कि निर्गुणिया का मोहना से प्रेम करके मेहतरों की बस्ती में शामिल हो जाना । दलित समाज के शोषण को स्वयं अपनी ऑखो से देखना फिर अपना जीवन मेहतरो की उन्नति में लगा देना बडी बात है । उपयास मे निर्गुणिया के यातनामय नारकीय जीवन गोरे लोगो का अप्राकृतिक यौन संबंध गांधी जी के अछुतोद्वार आंदोला निर्गुणिया के जीवन के संघर्ष के कई चित्र मिलते है । उपन्यास उल्लेख है मेहतर साला तो करज में ही जनमता है और करज मे ही मरता है । आज एक तो कल दूसरा महाजा नटई दबायेगा । मरना तो है ही ।[9] मेहतर जाति की दुर्गति की ओर संकेत करते हुए - नागर जी लिखते है कि यह गति क्या देव निर्मित है नहीं यह सामाजिक कृव्यवस्था की देन हैं । इसे बदलना ही होगा ।[10] असल में समाज को बदलने की प्रबल आकांक्षा दिखाई देती है ।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि नाच्यौ बहुत गोपाल मे सामाजिक चेतना के द्वारा उपेक्षित, वंचित, पीडित, शोषीत, दलित, लांछित, समाज को वाणी देता है । उपन्यास का अंत निर्गुणिया के दर्दन्-ाक अंत के साथ होता है । अत: निर्गुणिया का दर्द हमें अवश्य बेचैन करता है, इसमें कतई संदेह नहीं ।

संदर्भ सुची

1. नाच्यौ बहुत गोपाल अमृतलाल नागर, राजपाल एंड संज्ञ दिल्ली प्रसं 1978 पृ.93.
2. वही पृ. 73
3. वही पृ. 82.
4. वही पृ. 91.
5. वही पृ. 92
6. वही पृ. 92
7. वही पृ. 97
8. वही पृ. 12
9. वही पृ. 13
10. वही पृ. 14

❑❑❑